



CSIR IN MEDIA

A Daily News Bulletin

2nd August, 2016, Page: 1

IITR kit to test water quality

CSIR-IITR

For areas affected with contaminated water, the CSIR-Indian Institute of Toxicology Research (IITR) has developed a portable water analysis kit to test purity of water.

The kit, the first-of-its-kind in the country, can test 100 samples of water. The results will give a bacteriological and chemical analysis of the water. "The kit is ideal for testing contaminated water in rural areas where laboratory facilities are not available. It could be supplied to gram panchayats to monitor arsenic, fluoride and other types of pollutants in water resources," said IITR director Alok Dhawan.

He said the portable kit can be easily used in far-flung areas where people largely depend on untreated water. Nearly 70% of diseases occur due to contaminated and unsafe drinking water and the kit will be an effective tool to measure potability of water. The kit will also be useful in urban areas for health workers and laboratories. It can test total dissolved solids, fluoride, iron, nitrate, residual chlorine and alkalinity in water to ensure its safety for drinking purpose.

<http://timesofindia.indiatimes.com/city/lucknow/IITR-kit-to-test-water-quality/articleshow/53482081.cms>

TNN| August 1, 2016

IITR kit to test water quality

CSIR-IITR

IITR kit to test water quality

Mohita Tewari | TNN

Lucknow: For areas affected with contaminated water, the CSIR-Indian Institute of Toxicology Research (IITR) has developed a portable water analysis kit to test purity of water.

The kit, the first-of-its-kind in the country, can test 100 samples of water. The results will give a bacteriological and chemical analysis of the water. "The kit is ideal for testing contaminated water in rural areas where laboratory facilities are not available. It could be supplied to gram panchayats to monitor arsenic, fluoride and other types of pollutants in water resources," said IITR director Alok Dhawan.

He said the portable kit can be easily used in far-flung areas where people largely depend on untreated water. Nearly 70% of diseases occur due to contaminated and unsafe drinking water and the kit will be an effective tool to measure potability of water. The kit will also be useful in urban areas for health workers and laboratories. It can test total dissolved solids, fluoride, iron, nitrate, residual chlorine and alkalinity in water to ensure its safety for drinking purpose.

Mohita Tewari | Lucknow | August 1, 2016

IITR kit to test water quality

CSIR-IITR

बच्चों ने कौतूहल से पूछा... तो ऐसी दिखती है कोशिक

- ◆ सीएसआइआर भारतीय विषयविज्ञान अनुसंधान संस्थान (आइआइटीआर) और दैनिक जागरण के सहयोग से आयोजित हुई यंग इन्नोवेटर मीट
- ◆ मॉन्ट फोर्ट इंटर कॉलेज के छात्रों ने आइआइटीआर की लेब का किया भ्रमण

जागरण संवाददाता, लखनऊ : बैक्टीरिया क्या होता है, वायरस इसे कैसे संक्रमित करता है। कोशिकाएं कैसे दिखती हैं, ऐसे ही सवालों के जवाब जब बच्चों ने अपनी आंखों से देखे तो उनमें विज्ञान को लेकर जिज्ञासा और प्रबल हो गई। सीएसआइआर-भारतीय विषयविज्ञान अनुसंधान संस्थान (आइआइटीआर) और दैनिक जागरण के सहयोग से यंग इन्नोवेटर मीट कार्यक्रम के तहत मॉन्ट फोर्ट इंटर कॉलेज के नवी कक्षा के छात्रों ने शनिवार को आइआइटीआर की प्रयोगशाला का भ्रमण किया। भ्रमण में बच्चों ने विभिन्न आइआइटीआर की लेब में हो रहे कामों को न केवल प्रत्यक्ष रूप से देखा बल्कि उनके बारे में जानकारी भी हासिल की।

कोशिका शरीर के बिना कैसे जीवित रहती है : हयुमन सेल कल्चर की लेब में पहले बच्चों ने पहली बार कोशिका कल्चर को अपनी आंखों से देखा। डिशयू कल्चर कैसे किया जाता है, शरीर से अलग उन्हें लेब में कैसे जीवित रखा जाता है आदि की जानकारी दी गई। कोशिका या टिशू को लेबे समय तक कैसे जीवित रखा जाता है। लिफ्टिड नाइट्रोजन में किस तरह से टिशू को संरक्षित रखा जाता है। लेब में मौजूद विशेषज्ञों ने बच्चों के एक के बाद एक सवालों के जवाब दिए।

ड्रोसोफिला की आंखें कैसे होती हैं : छात्रों ने लेब की प्लाटफॉर्मिलीटी सेक्शन में ड्रोसोफिला मक्खी की कम्पाउंड आई के बारे में जाना। बच्चों



आइआइटीआर में यंग इन्नोवेटर मीट के दौरान मॉन्ट फोर्ट इंटर कॉलेज के छात्रों को बैक्टीरिया व वायरस की जानकारी देते निदेशक डॉ. आलोक धवन और प्रयोगशाला का भ्रमण करते छात्र

ने विशेषज्ञों से कम्पाउंड आई की कार्य प्रणाली के बारे में जानकारी हासिल की। मानव शरीर के लिए ऑक्सिजन की जरूरत होती है, वही कार्बन डाई ऑक्साइड की भी कुछ मात्रा शरीर के लिए आवश्यक होती है। कई रोचक जानकारीयें हासिल करके बच्चों को काफी संतुष्ट मिली।

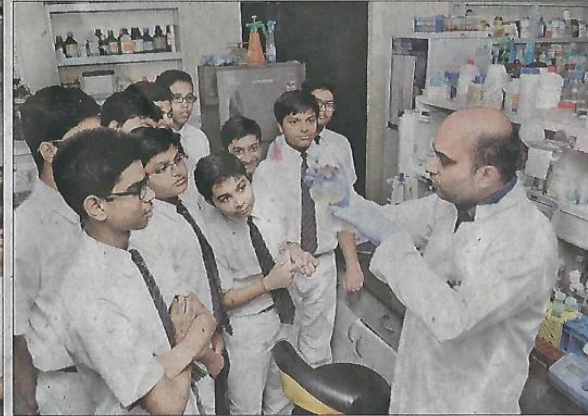
बच्चों में विज्ञान के प्रति पैदा हो उठासाह : आइआइटीआर के निदेशक डॉ. आलोक धवन ने बताया कि आजकल हाईस्कूल और इंटर तक आते-आते बच्चों के दिमाग में व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को भर दिया जाता है। जिसकी वजह से उनकी विज्ञान के प्रति रूचि धीरे-धीरे खत्म हो रही है। इसलिए जरूरी है कि स्कूल प्रशासन भी बच्चों को वैज्ञानिक संस्थानों का भ्रमण करवाए, जिससे उनमें विज्ञान के प्रति उत्सुकता जागृत होगी। इसलिए, हम चाहते हैं कि स्कूल प्रशासन

वैज्ञानिकों से बात कर खिले चेहरे

आज तक जिन बच्चों ने वैज्ञानिकों के बारे में सिर्फ किताबों में पढ़ा था। संस्थान में उनसे मिलकर बातचीत और उनके जीवन के विभिन्न पहलू को भी जाना। वहीं लेब में जाकर वैज्ञानिकों के काम करने के तरीके से भी सबस हूए।

सीएसआइआर की लेबों में बच्चों को भ्रमण करवाए। इसके लिए हमने शनिवार का दिन तय किया है, इस दिन स्कूल प्रशासन अनुमति लेकर लेब का भ्रमण कर सकते हैं।

काश और समय मिल पाता : लेब का भ्रमण करने के बाद जब बच्चे वापस आए तो उनकी जुबान पर यही शब्द थे कि थोड़ा और समय मिल पाता तो वह और कुछ सीख पाते।



वहीं भ्रमण के बाद निदेशक आलोक से बातचीत करते हुए कई बच्चों ने विषय के तौर पर विज्ञान को चुनने की बात भी कही। वहीं आदिल खान, सोभायजोत, अकीक और उकर्ष ने विज्ञान विषय चुनने और वैज्ञानिक बनने की इच्छा प्रकट की।

शिक्षक भी हुए उत्साहित : आइआइटीआर की लेब के भ्रमण का उत्साह न केवल बच्चों में बल्कि स्कूल की ओर से आए शिक्षकों में भी देखने को मिला। साईंस टीचर नैतू दाय ने बताया कि आइआइटीआर लेब का भ्रमण करके कान्नी चीजे सीखने को मिलीं। हमें आगे मीका मिलेगा तो वह फिर बच्चों को और ज्यादा समय के लिए लेकर यहां भ्रमण करवाएंगी। वहीं संस्थान की ओर से सभी बच्चों को डीएनए के सैम्पल तोहफे के रूप में दिए गए।

